... CONTRIBUTING IN RESURGENT INDIA
वैश्य AIVF
REPRESENTING OVER 25 CRORE PEOPLE

VAISH SAMMELAN

वैश्य सम्मेलन

A COMPETENT MONTHLY MAGAZINE OF GLOBAL VAISH COMMUNITY

वर्ष : 24 अंक : 6-7-8 जनवरी-फरवरी-मार्च 2013 कुल पृष्ठ : 60 मूल्य 10 रूपये

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की दो-दिवसीय चिंतन बैठक लोनावाला (महाराष्ट्र) में सम्पन्न

वैश्य दिवस (11 अप्रैल) की हार्दिक शुभकामनाएँ

कि हमारे वैश्य समाज ने क्या किया है। देश में वैश्य समाज का गृहमंत्री, वित्तमंत्री बने इसके लिए हमें प्रयास करना चाहिए। घटकों को जोड़ने के लिए हम एकता, परिचय, समन्वय कमेटी बनायें। कहीं न कहीं हमें इस दिशा में शुरूआत करनी होगी। उन्होंने कहा कि वैश्य समाज को शक्तिशाली बनाने में हम अपना संपूर्ण योगदान दें।

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री गोपाल एम. मोर ने मंचासीन अतिथियों की स्वागत श्रृंखला के उपरान्त अपने उद्‌बोधन में आगामी राज्यों व लोकसभा के चुनावों में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. संघी के नारे 'एक बूथ - दस यूथ' के क्रियान्वयन पर बल दिया। उन्होंने आगामी राज्यों व लोकसभा चुनावों में वैश्य समाज की सहभागिता बढ़ाने की आवश्यकता जताई।

उन्होंने मंच से घोषणा की कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की श्रृंखला में आगामी 15 अगस्त को नेपाल की राजधानी में वैश्य महासम्मेलन का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित होगा। श्री गोपाल मोर जी ने प्रदेशों से अनुरोध किया कि वे जल्दी से जल्दी केन्द्रीय ग्रांट का प्रयोग करें। उन्होंने मुम्बई से पधारे श्री एम.एम. गुप्ता का बैठक में पधारने पर स्वागत किया।

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के मानद संरक्षक श्री रजनी रंजन साहू ने कहा कि अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की स्थापना के समय से ही मुंबई वैश्यों का गढ़ है। यहाँ की आर्थिक स्थिति से ही देश की अर्थव्यवस्था चलती है। श्री बनारसीदास जी ने वैश्य सम्मेलन की स्थापना की। आज समय आ गया है कि वैश्य अपनी ऊर्जा और शक्ति को पहचानें। उन्होंने आगे कहा कि वैश्य समुदाय उस वृक्ष की तरह है जिसकी अनेकों शाखाएं हैं। वैश्य समुदाय के विश्व में 356 घटक हैं। अभी हमें और आगे जाना है। वैश्य अपनी ऊर्जा को पहचानें। एकता का मंत्र ही सर्वोपरि है। अत: एकता से वैश्य अपनी शक्ति को पहचानें। श्री रजनी रंजन साहू ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि संघी जी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में नौजवान बैठक में एकत्रित हैं। संस्था आगे बढ़े ऐसी अपेक्षा है।

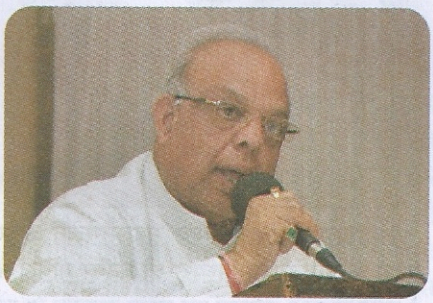

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मंगत राम सिंघल ने पूरे भारत से पधारे वैश्य समाज को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा समाज मजबूत समाज है परन्तु आज उसे सहारे की आवश्यकता है। आज देश में छोटे-छोटे कस्बों में दुकानदारों का शोषण किया जाता है। हमें अपनी संस्थाओं का विकेन्द्रीकरण करना होगा। वैश्य सम्मेलन के सदस्य बनाने के लिए स्रोत चाहियें। आज के समय में राजनीतिक लोगों को भी अपने समाज की जरूरत है। हमें आर्थिक संकट से उबरना होगा और संस्था को मजबूत बनाने पर विचार करना होगा। आज हमारे व्यापारी बंधु परेशान हैं। हमें उसे शक्ति और ताकत देनी होगी।

बैठक में श्री अश्विन संघी ने कहा कि वैश्य समाज का रंग प्रगति और खुशहाली का रंग है। गुप्त काल को 'स्वर्ण युग' कहते हैं। इसके पीले रंग के पीछे भी वैश्यों का ही हाथ है। प्रसिद्ध इतिहासकार रामशरण वर्मा का भी कहना है कि गुप्त वंश का मूल वैश्य वंश ही था। वैश्य समुदाय का योगदान सिर्फ व्यापार में ही नहीं है। वैश्य समाज ने जैन और बौद्ध धर्म को भी प्रोत्साहित किया है। उन्होंने कहा कि आज हमारे सामने बहुत चुनौतियां हैं जिनका हमें डटकर सामना करके उनसे पार पाना है।

बैठक को संबोधित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री दाउजी गुप्ता ने कहा कि वैश्य सम्मेलन के उत्थान में डॉ. संघी का बहुत बड़ा योगदान है। डॉ. संघी जी ने वैश्य महासम्मेलन के कार्यक्षेत्र को पूरे विश्व में पहुँचा दिया। उनके नेतृत्व में बैंकाक, दुबई, मॉरीशस में वैश्य महासम्मेलन की शाखाएं खोली गईं। उन्होंने कहा कि अर्जुन की आँख की तरह हमारा लक्ष्य संसद भवन होना चाहिए, तभी हमारा समाज प्रगति करेगा। उन्होंने कहा कि चिंता नकारात्मक होती है तथा चिन्तन सकारात्मक होता है। आज की चिंतन बैठक में हम जो चिंतन करेंगे वो पूरे वर्ण, पूरे देश के लिए करेंगे। अपनी बिखरी हुई ऊर्जा को हमें एकत्र करना है। आज समाज की ऊर्जा बिखरी हुई है। सूरीनाम में हमारा वर्चस्व है जबकि फिजी में वैश्यों के एकाधिकार की जरूरत है।

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की

दो-दिवसीय चिंतन बैठक लोनावाला में सम्पन्न

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की दो-दिवसीय चिंतन बैठक प्रकृति की गोद में स्थित श्री नारायणी धाम, लोनावाला, महाराष्ट्र के सुरम्य वातावरण में दिनांक 16 मार्च 2013 को प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम राष्ट्रीय महामंत्री श्री गोपाल मोर ने सम्मानित अतिथियों को मंचासीन कराया। तत्पश्चात राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गिरीश संघी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मंगतराम सिंघल, अशोक टिबेरवाल, लल्लूराम महावर, रजनी रंजन साहू, अरूणा ओसवाल, अश्विन संघी ने दीप प्रज्जवलन किया। तत्पश्चात श्री गोपाल मोर ने बैठक का शुभारंभ करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. संघी को मंच पर उद्‌बोधन हेतु आमंत्रित किया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. संघी ने कहा कि हमें अपने ऊर्जा और शक्ति को जानकर अपने लक्ष्य पर चिंतन करना है। आज समाज में हर इन्सान, हर परिवार चाहता है कि वह तरक्की करे परन्तु तरक्की के लिए उसे अपनी क्षमता को जानना होगा तथा इस हेतु उसे सामाजिक और राजनीतिक सहयोग मिलना जरूरी है। हमारे वैश्य समाज में क्षमता होते हुए भी आज उसे जिस ऊंचाई पर पहुंचना चाहिए वह वहां तक तक नहीं पहुंचा है। इसका बड़ा कारण है कि हमारे अन्दर ऐसी चेतना का अभाव है कि किस प्रकार हम एक दूसरे का साथ दें और कैसे आगे बढ़ें अगर हमारे समाज के लोग स्कूल कॉलेज खोलें तो समाज के बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त होगी, अस्पताल खुलने से अच्छी चिकित्सा मिलेगी उसी प्रकार राजनीति में अगर हमारा हस्तक्षेप हो तो हमारे समाज को आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। इस चिंतन बैठक का यही उद्देश्य है कि कैसे हममें नेतृत्व क्षमता विकसित हो और किस प्रकार हम आगे बढ़ें।

डॉ. संघी ने बैठक में पधारने पर सभी का आभार जताया। उन्होंने दिल्ली में वैश्य भवन की आवश्यकता बताते हुए श्री रामकैलाश गुप्ता को इसका संयोजक बनाया। उन्होंने कहा कि हमारा विश्वास है कि वैश्य समाज में क्षमता है, ऊर्जा है। अगर इस ऊर्जा को हम जोड़ दें तो ये संगठित होकर पूरे विश्व में ऊर्जा देगी। अगर हम समाज में डाली हुई बेड़ियों को तोड़कर संगठित हो जाएं तो देश में 12 से 15% ग्रोथ रेट हमारा समाज दे सकता है और भारत तरक्की की राह पर आगे बढ़ सकता है।

उन्होंने कहा कि वैश्य समाज गरीबों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य सहायता हेतु सदैव तत्पर रहा है। उन्होंने अधिक से अधिक लाइफ मेंबर, चीफ पैटर्न और साधारण सदस्य बनाने का आह्वान किया। उन्होंने साधारण सदस्यता का शुल्क 10 रू. रखने की घोषणा करते हुए गांव-गांव जाकर सदस्य बनाने और संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमें समाज के नीचे और गरीब तबके को मान-सम्मान देना होगा। सदस्यता अभियान इसी दिशा में एक प्रयास है। प्रदेशों के कामकाज पर उन्होंने कहा कि हमें अपनी गतिविधियां तेज करनी होंगी और पूरी क्षमता से काम करना होगा। उन्होंने कहा कि हमने जम्मू-कश्मीर में सम्मेलन की शाखा खोली है तथा देश के अलग-अलग राज्यों में सम्मेलन काफी काम कर रहा है।

उन्होंने कहा कि संगठन की जिम्मेदारी केवल एक आदमी नहीं उठा सकता। उन्होंने कहा कि यादवों ने संगठित होकर उत्तर प्रदेश और बिहार पर कब्जा किया है। हरियाणा पर जाटों ने कब्जा किया पर सोचने का विषय है

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की लोनावाला (महाराष्ट्र) में आयोजित 'चिंतन बैठक' की झलकियाँ